ABSTRACT

The tea garden workers in Assam are originally from present day Bihar, Jharkhand, Orissa, Madhya Pradesh and West Bengal. Since the workers got recruited on a family basis; the workers got settled in Assam. Even though the tea gardens are a labour driven industry, the labours live a pitiful life and there is a high degree of dependency on the owners of the company. In addition to that the workers have to follow stringent rules.

Plucking tea leaves is typically feminine in nature, which requires women nimble fingers. Therefore, half of the workforce in tea industry constitutes women. The daily life of the tea garden workers were guarded and restricted by the garden clock. The women who pluck tea that we drink, they reside in pitiful conditions with low wages by the Tea estate in Assam. The workers found to be underprivileged and unaware about the working rules and regulations. They lack the power of decision making and are heavily dependent on the male members of the family. The company provides housing facilities but the renovation is done by the workers themselves by spending their own penny. When it comes to the sanitation, most of the workers do not have access to the clean latrine. Education which is regarded as the trajectory of upward mobility in all sphere was absent among tea garden workers.

The permanent Tea garden workers works for 12 months. The situation for temporary workers is not good. They face huge financial crisis as they get to work for only 6 months a year. The permanent and temporary workers are paid the same amount of wage. In case of ration, only permanent workers are provided ration.

Women dominated every sphere of the commercial and domestic culture related to the tea gardens, be it tasks like plucking, cleaning, manuring, planting, or running errands

and doing chores for their personal households. We can understand the status of Tea garden workers through Marxian lens and Foucault's idea of panopticism.

Throughout the study it was found that women are working and giving financial support to their family. But, they were not free from domestic violence. Women workers face domestic violence more from their alcoholic husbands. We need to understand that merely giving economic power to women is not going to give us the desired result. The problem is in the very idea which creates different structures in our society.

Company provides some basic facilities like housing, ration, water, medical, electricity and education, but there does not seem to be any up gradation of the old schemes at par with the modern times. The management have the competency to detach the bottlenecks in the process of implementation of welfare measures for the workers but they never exhibit their empathy towards the workers.

Abstract

असम के चाय बागान मजदूर मूल रूप से वर्तमान बिहार, झारखंड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल के हैं। चूंकि श्रमिकों को पारिवारिक आधार पर भर्ती किया गया था; कार्यकर्ता असम में बस गए। भले ही चाय बागान एक श्रम संचालित उद्योग हैं, मजदूरों को दयनीय जीवन जीना पड़ता है और कंपनी के मालिकों पर निर्भरता का एक उच्च स्तर है। इसके अलावा, श्रमिकों को कड़े नियमों का पालन करना होगा। चाय की पत्ती चढ़ाना आमतौर पर प्रकृति में स्त्री है, जिसके लिए महिलाओं को फुर्तीली उंगलियों की आवश्यकता होती है। इसलिए, चाय उद्योग में कर्मचारियों की संख्या का आधा हिस्सा महिलाओं का है। चाय बागान के श्रमिकों के दैनिक जीवन को बगीचे की घड़ी द्वारा संरक्षित और प्रतिबंधित किया गया था। जो महिलाएं चाय पीती हैं, जो हम पीते हैं, वे असम में चाय एस्टेट द्वारा कम मजदूरी के साथ दयनीय स्थिति में रहती हैं। श्रमिकों को काम के नियमों और विनियमों से वंचित और अनजान पाया गया। उनके पास निर्णय लेने की शक्ति का अभाव है और वे परिवार के पुरुष सदस्यों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। कंपनी आवास की सुविधा प्रदान करती है, लेकिन नवीनीकरण श्रमिकों द्वारा स्वयं पैसा खर्च करके किया जाता है। जब स्वच्छता की बात आती है, तो अधिकांश श्रमिकों के पास स्वच्छ शौचालय तक पहुंच नहीं है। शिक्षा जिसे सभी क्षेत्रों में ऊपर की गतिशीलता का पथ माना जाता है, चाय बागान श्रमिकों के बीच अनुपस्थित थी।

स्थायी चाय बागान मजदूर 12 महीने तक काम करते हैं। अस्थायी श्रमिकों के लिए स्थिति अच्छी नहीं है। साल में केवल 6 महीने काम करने के लिए उन्हें भारी वित्तीय संकट का सामना करना पड़ता है। स्थायी और अस्थायी श्रमिकों को समान वेतन का भुगतान किया जाता है। राशन के मामले में, केवल स्थायी श्रमिकों को ही राशन प्रदान किया जाता है।

चाय बागानों से जुड़ी व्यावसायिक और घरेलू संस्कृति के हर क्षेत्र में महिलाओं का वर्चस्व है, यह उनके निजी घरों के लिए प्लकिंग, सफाई, प्रबंधन, रोपण, या काम चलाना और काम करना जैसे कार्य हैं। हम मार्क्सियन लेंस और फाउकॉल्ट के पनोप्टिकवाद के विचार के माध्यम से चाय बागान श्रमिकों की स्थिति को समझ सकते हैं।

अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि महिलाएँ काम कर रही हैं और अपने परिवार को आर्थिक सहायता दे रही हैं। लेकिन, वे घरेलू हिंसा से मुक्त नहीं थे। महिला कार्यकर्ताओं को अपने शराबी पति से अधिक घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ता है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि महिलाओं को केवल आर्थिक शक्ति देने से हमें वांछित परिणाम नहीं मिलेंगे। समस्या बहुत विचार में है जो हमारे समाज में विभिन्न संरचनाएं बनाती है।

टी एस्टेट कंपनी आवास, राशन, पानी, चिकित्सा, बिजली और शिक्षा जैसी कुछ बुनियादी सुविधाएं प्रदान करती है, लेकिन आधुनिक समय के साथ पुरानी योजनाओं का कोई उन्नयन नहीं होता है। प्रबंधन के पास श्रमिकों के लिए कल्याणकारी उपायों के कार्यान्वयन की प्रक्रिया में बाधाओं को अलग करने की क्षमता है, लेकिन वे श्रमिकों के प्रति अपनी सहानुभूति का प्रदर्शन नहीं करते हैं।